Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
July to September 2025, E-Journal, Vol. I, Issue LI (51), ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

पर्यटन विकास में सांस्कृतिक विरासत की भूमिका

डॉ. राम सिंह धुर्वे *

* सहायक प्राध्यापक (भूगोल) शासकीय स्नातक महाविद्यालय, नैनपुर, जिला-मण्डला (म.प्र.) भारत

शोध सारांश – पर्यटन आज विश्व अर्थव्यवस्था और सामाजिक-सांस्कृतिक विकास का महत्वपूर्ण क्षेत्र बन चुका है। इसमें सांस्कृतिक विरासत की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है। सांस्कृतिक विरासत को दो भागों में बाँटा जा सकता है- भौतिक (स्मारक, मंदिर, किले, शिल्प, स्थापत्य) और अभौतिक (लोकगीत, नृत्य, त्योहार, परंपराएँ, भोजन, भाषा) ये तत्व न केवल किसी क्षेत्र की ऐतिहासिक पहचान को दर्शाते हैं बल्कि पर्यटन के प्रमुख आकर्षण भी बनते हैं। भारत जैसे बहुसांस्कृतिक देश में सांस्कृतिक पर्यटन का विशेष महत्व है। ताजमहल, खजुराहो, अजंता-एलोरा, वाराणसी और अमृतसर जैसे स्थल देश की विविध सांस्कृतिक धरोहर के उदाहरण हैं। इन स्थलों के कारण न केवल विदेशी पर्यटन आकर्षित होते हैं, बल्कि स्थानीय समुदाय को रोजगार, हस्तशिल्प और कला के विकास के अवसर भी मिलते हैं। सांस्कृतिक पर्यटन से आर्थिक लाभ के साथ-साथ सांस्कृतिक संरक्षण और अंतर्राष्ट्रीय सांस्कृतिक आदान-प्रदान को भी बढ़ावा मिलता है। इसमें चुनौतियाँ भी हैं जैसे वाणिज्यीकरण, सांस्कृतिक क्षरण और विरासत स्थलों पर दबाव। अत: सतत् पर्यटन की रणनीति से ही संतुलित विकास संभव है। सांस्कृतिक विरासत पर्यटन की आत्मा है जो न केवल क्षेत्रीय अर्थव्यवस्था को गति देती है बल्कि समाज को अपनी जड़ों से जोड़ती है।

शब्द कुंजी- सांस्कृतिक पर्यटन, सांस्कृतिक विरासत।

प्रस्तावना – पर्यटन 21 वीं सदी की सबसे तेजी से विकसित होने वाली आर्थिक और सामाजिक गतिविधियों में से एक है। संयुक्त राष्ट्र विश्व पर्यटन संगठन के अनुसार पर्यटन विश्व अर्थव्यवस्था में तीसरे सबसे बड़े उद्योगों में गिना जाता है जो प्रतिवर्ष अरबों डॉलर का राजस्व उत्पन्न करता है। यह न केवल देशों की विदेशी मुद्रा आय का प्रमुख स्रोत है बल्कि करोड़ों लोगों के लिए रोजगार भी सुनिश्चित करता है। वैश्विक स्तर पर पर्यटन देशों को एक-दूसरे को जोड़ने वाला एक सशक्त माध्यम है। यह सांस्कृतिक आदान-प्रदान और मानव सहयोग को बढ़ावा देता है। पर्यटक जब एक देश से दूसरे देश की यात्रा करते हैं तो वे वहाँ की संस्कृति, परंपरा, खान-पान और जीवन शैली को समझते हैं। इससे विभिन्न समाजों के बीच आपसी समझ और सहिष्णुता बढ़ती है जो विश्व शांति और सहयोग की दिशा में महत्वपूर्ण कदम है। पर्यावरणीय दृष्टि से भी पर्यटन का बहुत महत्व है जब प्राकृतिक स्थल, वन्यजीव अभ्यारण्य और ऐतिहासिक धरोहरें पर्यटन आकर्षक बनती हैं तो उनके संरक्षण पर अधिक ध्यान दिया जाता है। कई देशों ने सतत् पर्यटन की अवधारणा को अपनाकर विकास और पर्यावरण के बीच संतुलन स्थापित करने का प्रयास किया है। अंतर्राष्ट्रीय राजनीति और कूटनीति में भी पर्यटन एक प्रभावी भूमिका निभाता है। यह किसी देश की अंतर्राष्ट्रीय पहचान को सुदृढ़ करता है। पर्यटन केवल आर्थिक लाभ तक सीमित नहीं है बल्कि यह सांस्कृतिक समझ, पर्यावरणीय संरक्षण और वैश्विक शांति का भी माध्यम है। यही कारण है कि पर्यटन को आधुनिक विश्व में वैश्विक विकास और सहयोग का सेतु माना जाता है।

अध्ययन के उद्देश्य:

1. सांस्कृतिक विरासत की अवधारणा को स्पष्ट करना।
2. पर्यटन विकास में सांस्कृतिक विरासत की भूमिका का विश्लेषण करना।
3. आर्थिक एवं सामाजिक योगदान का अध्ययन करना।
4. सांस्कृतिक संरक्षण और संवर्धन की प्रक्रिया को समझना।
5. स्थानीय समुदाय की भागीदारी की भूमिका को रेखांकित करना।
6. चुनौतियों और समस्याओं की पहचान करना।
7. सतत् पर्यटन की संभावनाओं का आकलन करना।
8. नीतिगत सुझाव प्रस्तुत करना।

सांस्कृतिक विरासत की अवधारणा एवं स्वरूप- सांस्कृतिक विरासत किसी समाज, समुदाय या राष्ट्र द्वारा संरक्षित और पीढ़ी दर पीढ़ी संचारित की जाने वाली परंपराओं, स्मारकों , कलाओं, रीति-रिवाजों, विश्वासों और सामाजिक मूल्यों का संग्रह है। यह केवल भौतिक वस्तुओं तक सीमित नहीं है अभौतिक रूप में ज्ञान, संगीत, नृत्य, त्यौहार और लोककथाओं को भी सम्मिलित करती है। सांस्कृतिक विरासत समाज की पहचान, इतिहास और गौरव का प्रतीक होती है। यह अतीत से वर्तमान को जोड़ती है और भविष्य की पीढ़ियों को उनके सांस्कृतिक मूल्यों से परिचित कराती है। सांस्कृतिक विरासत से आशय उन परंपराओं, धरोहरों और अभिव्यक्तियों से है जो किसी समाज की ऐतिहासिक पहचान और सांस्कृतिक निरंतरता को दर्शाती है। यह किसी समुदाय की जीवन शैली, आस्था, कला, स्थापत्य, रीति-रिवाज और मूल्यों का दर्पण होती है। यूनेस्को के अनुसार सांस्कृतिक विरासत दो प्रकार की होती है- भौतिक सांस्कृतिक विरासत- इसमें वे सभी भौतिक धरोहरें आती हैं जिन्हें प्रत्यक्ष रूप से देखा और स्पर्श किया जा सकता है जैसे- ऐतिहासिक स्मारक, मंदिर, मस्जिद, चर्च, किले, मूर्तियाँ, चित्रकला, स्थापत्य, हस्तशिल्प और पुरातात्विक अवशेष। अभौतिक सांस्कृतिक विरासत जैसे-पवित्र नदियाँ, पर्वत, वन क्षेत्र आदि आते हैं जिन्हें सांस्कृतिक आस्था और मान्यताओं में गहराई से निहित हैं। सांस्कृतिक विरासत किसी

समाज की ऐतिहासिक चेतना, पहचान और गौरव का प्रतीक है जो न केवल अतीत को संरक्षित करती हैं बल्कि वर्तमान और भविष्य की सांस्कृतिक दिषा भी निर्धारित करती है।

पर्यटन विकास और सांस्कृतिक विरासत का अंतर्संबंध– पर्यटन और सांस्कृतिक विरासत का संबंध अत्यंत गहरा और परस्पर सहायक है। किसी समाज की सांस्कृतिक विरासत जिसमें ऐतिहासिक स्मारक, मंदिर, किले, महल, पुरातात्विक स्थल, लोकनृत्य, संगीत, त्यौहार और पारंपरिक कला शामिल हैं ये पर्यटन के मुख्य आकर्षण का आधार बनती हैं। पर्यटक इन स्थलों और परंपराओं का अनुभव करने के लिए किसी क्षेत्र का दौरा करते हैं, जिससे स्थानीय और राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था को लाभ मिलता है। इस तरह सांस्कृतिक विरासत पर्यटन को केवल आकर्षक नहीं बनाती बल्कि यह सामाजिक और आर्थिक विकास में भी योगदान देती है। पर्यटन से उत्पन्न आय से स्मारकों और धरोहर स्थलों के संरक्षण, रख–रखाव और संवर्धन के प्रयास तेज होते हैं। स्थानीय समुदाय इस संबंध में अहम भूमिका निभाता है। पर्यटन के कारण गाइड होटल, परिवहन, हस्तशिल्प और कला उद्योग मे रोजगार उत्पन्न होता है। इसके अतिरिक्त सांस्कृतिक पर्यटन अंतर–सांस्कृतिक संवाद और वैश्विक समझ को बढ़ावा देता है। विदेशी और देशी पर्यटक स्थानीय संस्कृति, रीति–रिवाज और परंपराओं को अनुभव करके सांस्कृतिक आदान–प्रदान करते हैं।

भारत में सांस्कृतिक पर्यटन– भारत विश्व का सबसे प्राचीन और विविधतापूर्ण सांस्कृतिक धरोहरों वाला देश है। यहाँ हजारों वर्षों से चली आ रही परंपराएँ, रीति–रिवाज, कला, साहित्य, स्थापत्य, संगीत, नृत्य और धार्मिक मान्यताएँ सांस्कृतिक विविधता का अद्धितीय उदाहरण प्रस्तुत करती हैं। यही कारण है कि भारत सांस्कृतिक पर्यटन के लिए एक महत्वपूर्ण आकर्षण केंद्र है। सांस्कृतिक पर्यटन से आशय केवल दर्शनीय स्थलों के भ्रमण तक सीमित नहीं है इसमें लोगों के जीवन–शैली, लोककला, त्योहारों, धार्मिक स्थलों, ऐतिहासिक स्मारकों तथा स्थानीय खान–पान के अनुभवों को शामिल किया जाता है। भारत में सांस्कृतिक पर्यटन का स्वरूप मुख्यत: निम्न आयामों में दिखाई देता है–

1. **धार्मिक और तीर्थ पर्यटन–** भारत को आध्यात्मिक भूमि कहा जाता है। यहाँ वाराणसी, उज्जैन, हरिद्वार, अमृतसर का स्वर्ण मंदिर, पुष्कर, वैष्णो देवी, तिरूपति बालाजी, जगन्नाथपुरी, काशी विश्वनाथ, बद्रीनाथ, केदारनाथ और शिर्डी जैसे तीर्थ स्थल लाखों श्रद्धालुओं और पर्यटकों को आकर्षित करते हैं। इसी प्रकार बौद्ध तीर्थ जैसे बोधगया, सारनाथ और कुशीनगर तथा अजमेर शरीफ दरगाह, फतहपुर सीकरी आदि धार्मिक समरसता के केंद्र हैं।
2. **ऐतिहासिक और स्थापत्य पर्यटन**– भारत की ऐतिहासिक धरोहरें इसकी सांस्कृतिक पर्यटन की रीढ़ हैं। आगरा का ताजमहल, दिल्ली का लाल किला, कुतुबमीनार, जयपुर का हवा महल, खजुराहो के मंदिर, कोणार्क का सूर्य मंदिर स्थापत्य कला के अद्भुत उदाहरण हैं। ये स्मारक इतिहास की झलक प्रस्तुत करते हैं और भारत की समृद्ध शिल्पकला और स्थापत्य कौशल का परिचय भी कराते हैं।
3. **त्योहार और मेले–** भारत का सांस्कृतिक पर्यटन इसके त्योहरों और मेलों से भी समृद्ध है। दीपावली, होली, दुर्गा पूजा, ईद, क्रिसमस जैसे त्योहार पूरे देश में उल्लासपूर्वक मनाए जाते हैं। वहीं कुंभ मेला, पुष्कर मेला, गोवा कार्निवल, नागालैंड का हॉर्नबिल फेस्टिवल और राजस्थान का डेजर्ट फेस्टिवल लाखों देशी–विदेशी पर्यटकों को आकर्षित करते हैं।
4. **लोककला और शास्त्रीय कला–** भारत के विभिन्न क्षेत्रों की अपनी लोककलाएँ और शास्त्रीय नृत्य संगीत की परंपराएँ हैं। भरतनाट्यम, कत्थक, ओडिसी, कथकली और कुचिपुड़ी जैसे नृत्य भारत की पहचान हैं। वहीं भांगड़ा, गरबा, लावणी, घुमर जैसे नोकनृत्य भी सांस्कृतिक पर्यटन के आकर्षण हैं। संगीत में शास्त्रीय रागों से लेकर लोकगीत और सूफी संगीत तक की विविधता देखने को मिलती है।
5. **हस्तशिल्प और खान–पान–** भारत के हस्तशिल्प, बुनाई और शिल्पकला भी पर्यटकों को लुभाते हैं। कश्मीर की पश्मीना शॉल, वाराणसी की बनारसी साड़ी, राजस्थान की जूतियाँ, दक्षिण भारत के कांस्य शिल्प प्रसिद्ध हैं। इसी प्रकार भारतीय व्यंजनों की विविधता–मशालेदार उत्तर भारतीय भोजन, दक्षिण भारत का डोसा–इडली, गुजराज का ढोकला, बंगाल की मिठाईयाँ और गोवा का सी–फूड पर्यटकों को विशेष अनुभव कराते हैं। भारत में सांस्कृतिक पर्यटन का स्वरूप अत्यंत व्यापक और विविधतापूर्ण है। आज वैश्वीकरण के दौर में लोग नए अनुभवों की खोज में हैं तब भारत का सांस्कृतिक पर्यटन उन्हें विविधता और एकता का अद्धितीय संगम प्रदान करता है। इससे आर्थिक विकास होता है तथा सांस्कृतिक विरासत का संरक्षण और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर भारत की पहचान भी सुदृढ़ होती हैं।

सांस्कृतिक विरासत आधारित पर्यटन के लाभ–भारत सहित विश्व के अनेक देशों में सांस्कृतिक विरासत पर्यटन तेजी से लोकप्रिय हो रहा है। यह पर्यटन दर्शनीय स्थलों की यात्रा तक सीमित नहीं है किसी देश, क्षेत्र या समुदाय की संस्कृति, इतिहास और परंपराओं को गहराई से जानने का अवसर प्रदान करता है। सांस्कृतिक विरासत आधारित पर्यटन से न केवल आर्थिक विकास होता है बल्कि समाज और संस्कृति दोनों पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है। इसके लाभ इस प्रकार हैं–

1. **आर्थिक विकास और रोजगार सृजन–** सांस्कृतिक विरासत पर्यटन किसी देश की अर्थव्यवस्था को सषक्त बनाता है। जब पर्यटक ऐतिहासिक स्थलों, मंदिरों, किलों, महलों और सांस्कृतिक आयोजनों में आते हैं तो स्थानीय लोगों के लिए रोजगार के अवसर बढ़ते हैं। होटल, परिवहन, गाईड सेवा, हस्तशिल्प बिक्री, रेस्टॉरेन्ट, पर्यटन एजेंसियाँ और सांस्कृतिक कार्यक्रमों से प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से आय के स्रोत बनते है।

भारत में सांस्कृतिक पर्यटन से होने वाली आय से पिछले दस वर्षों में महत्वपूर्ण वृद्धि देखी गई है। 2013 से 2023 तक के आंकड़ों के अनुसार विदेशी मुद्रा में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है।

सांस्कृतिक पर्यटन से विदेशी मुद्रा में आय– (2013–2023)

वर्ष	विदेशी मुद्रा आय (करोड़ रू.)	वृद्धि दर (%)
2013	107563	–
2014	120366	11.90
2015	134843	12.03
2016	150750	11.80
2017	178189	18.20
2018	195312	9.61
2019	216467	10.83
2020	50136	–76.84
2021	65070	29.79
2022	139935	115.05
2023	275000 करोड़ अनुमानित	147.7

स्रोत: भारत पर्यटन सांख्यिकी 2023, पर्यटन मंत्रालय, भारत सरकार

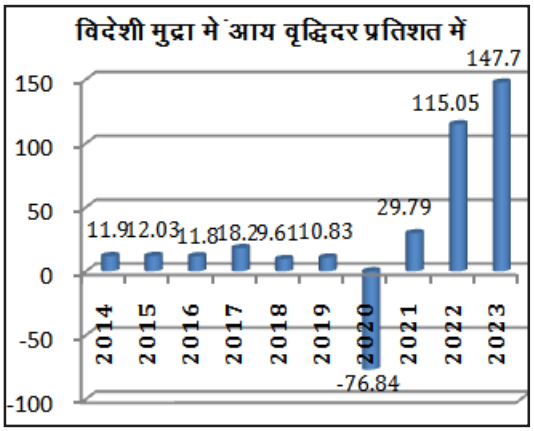

2023 में विदेशी पर्यटकों द्वारा खर्च की गई राशि 2.75 लाख करोड़ रू. तक पहुँच गई जो 2022 की तुलना में 147.7 प्रतिशत की वृद्धि को दर्शाता है। यह वृद्धि महामारी के बाद पर्यटन क्षेत्र में सुधार और सांस्कृतिक स्थलों की बढ़ती लोकप्रियता को दर्षाती है। सांस्कृतिक पर्यटन से होने वाली आय में इस वृद्धि का प्रमुख कारण भारत की समृद्ध सांस्कृतिक धरोहर, ऐतिहासिक स्मारक, धार्मिक स्थल और विविध लोक परंपराएँ हैं। सरकार की पहलें जैसे देखो अपना देश अभियान साथ ही बेहतर बुनियादी ढ़ाँचा और प्रचार-प्रसार ने इस क्षेत्र को और भी सशक्त किया है।

2. **सांस्कृतिक संरक्षण और संवर्धन-** सांस्कृतिक पर्यटन लोगों को अपनी धरोहरों के महत्व का बोध होता है। जब पर्यटक बड़ी संख्या में किसी स्मारक या सांस्कृतिक स्थल पर आते हैं तो सरकार और स्थानीय समुदाय उनके संरक्षण पर ध्यान देने लगते हैं। जिससे नई पीढ़ी को भी इनसे जोड़ने का अवसर मिलता है।

3. **स्थानीय कला, शिल्प और परंपराओं को बढ़ावा-** पर्यटक हमेशा स्थानीय हस्तशिल्प, लोककला और परंपराओं में रूचि लेते हैं। राजस्थान के ब्लू पॉटरी, कच्छ की कढ़ाई, वाराणसी की साड़ियाँ, मध्यप्रदेश के गोंड़ चित्रकला, कश्मीर की पश्मीना शॉल ये सब सांस्कृतिक पर्यटन की वजह से अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर प्रसिद्ध हुए हैं। इससे कारीगरों और शिल्पकारों को पहचान के साथ आर्थिक लाभ होता है।

4. **सामाजिक एकता और सांस्कृतिक आदान-प्रदान**- सांस्कृतिक पर्यटन से विभिन्न क्षेत्रों और देशों के लोग एक-दूसरे से जुड़ते हैं। यह सांस्कृतिक आदान-प्रदान और आपसी समझ को बढ़ाता है। जब विदेशी पर्यटक भारत के त्योहारों, नृत्यों या भोजन का अनुभव करते हैं तो वे भारतीय संस्कृति को गहराई से समझ पाते हैं।

5. **शिक्षा और ज्ञान का विस्तार-** सांस्कृतिक पर्यटन मनोरंजन का साधन मात्र नहीं है यह शिक्षा का माध्यम भी है। ऐतिहासिक स्मारक, संग्रहालय, कला दीर्घाएँ और पारंपरिक उत्वस युवाओं और छात्रों को अपने इतिहास और संस्कृति की गहरी समझ प्रदान करते हैं। यह अनुभव पुस्तकों से कहीं अधिक जीवंत और प्रभावशाली होता है।

6. **ग्रामीण और कम विकसित क्षेत्रों का विकास-** सांस्कृतिक धरोहरें और लोककलाएँ ग्रामीण क्षेत्रों में अधिक मिलती हैं। जब पर्यटक वहाँ जाते हैं तो उन क्षेत्रों में बुंनियादी ढ़ाँचे का विकास होता है। ग्रामीण क्षेत्र भी राष्ट्रीय विकास की धारा में शामिल होते हैं।

7. **पर्यावरणीय जागरूकता-** सांस्कृतिक पर्यटन का संबंध प्राकृतिक स्थलों और पर्यावरण से भी होता है। जब पर्यटक प्रकृति और संस्कृति का अनुभव करते हैं तो उनमें पर्यावरण संरक्षण के प्रति जागरूकता बढ़ती है। सरकार और स्थानीय निकाय भी पर्यटन स्थलों को स्वच्छ और हरित बनाए रखने पर अधिक ध्यान देते हैं।

सांस्कृतिक विरासत आधारित पर्यटन से आर्थिक लाभ के साथ सामाजिक एकता, सांस्कृतिक संरक्षण, शिक्षा और अंतर्राष्ट्रीय सहयोग भी प्रदान करता है। यह हमारी प्राचीन परंपराओं और धरोहरों को नई पीढ़ी तक पहँचाने का एक सशक्त साधन है। इस प्रकार सांस्कृतिक पर्यटन राष्ट्र की सांस्कृतिक अस्मिता को संरक्षित करते हुए सतत् विकास की दिषा में महत्वपूर्ण योगदान देता है।

चुनौतियाँ- सांस्कृतिक विरासत आधारित पर्यटन आज विष्व में तेजी से लोकप्रिय हो रहा है। भारत जैसे देश में इसकी अपार संभावनाएँ हैं क्योंकि हजारों वर्षों की ऐतिहासिक धरोहरें, मंदिर, मस्जिद, किले, महल, कला और परंपराएँ विद्यमान हैं। परंतु इनके विकास और संरक्षण में अनेक चुनौतियाँ आती हैं यदि इन चुनौतियों का समाधान नहीं किया गया तो पर्यटन उद्योग प्रभावित होगा और सांस्कृतिक धरोहरों का अस्तित्व भी संकट में पड़ सकता है।

1. **संरक्षण और रख-रखाव की समस्या-** भारत की अनेक ऐतिहासिक इमारतें, स्मारक और धरोहरें समय के साथ प्रदूषण और उपेक्षा के कारण जर्जर हो रहीं हैं। ताजमहल का संगमरमर प्रदूषण से पीला पड़ गया है। अनेक किलों और महलों की दीवारें टूट रही हैं। पर्यटन बढ़ने से भीड़ का दबाव बढ़ता है जिससे धरोहरों के संरक्षण में कठिनाई आती है।

2. **अत्यधिक पर्यटक दबाव-** कई प्रसिद्ध सांस्कृतिक स्थलों पर पर्यटकों की संख्या क्षमता से अधिक होती है। इससे प्रदूषण, धरोहरों को क्षति और स्थानीय लोगों के जीवन पर नकारात्मक प्रभाव पड़ता है।

3. **व्यवसायीकरण और सांस्कृतिक मूल्यों का ह्रास-** सांस्कृतिक पर्यटन से बढ़ते बाजार में कई बार पारंपरिक कला, नृत्य, हस्तशिल्प और त्योहार केवल प्रदर्शन तक सीमित हो जाते हैं। जबकि संस्कृति को केवल पर्यटकों को आकर्षित करने का साधन बनाया जाता है, तो उसकी मौलिकता और अध्यात्मिकता खाने लगती है।

4. **बुनियादी ढ़ाँचे की कमी-** ग्रामीण दूरदराज क्षेत्रों में जहाँ समृद्ध सांस्कृतिक धरोहरें हैं वहाँ सड़क, परिवहन, स्वच्छता, पानी, इंटरनेट और ठहरने की सुविधाओं का अभाव है। उचित बुनियादी सुविधा न होने से पर्यटक वहाँ जाना कम पसंद करते हैं।

5. **अपर्याप्त वित्तीय संसाधन-** धरोहर स्थलों के संरक्षण और प्रचार-प्रसार के लिए पर्याप्त धन की आवश्यकता होती है। कई बार सरकार और स्थानीय निकायों के पास आवश्यक संसाधन नहीं होते। निजी क्षेत्र भी केवल व्यवसायिक दृष्टि से निवेश करता है।

6. **प्रबंधन और सुरक्षा की चुनौतियाँ-** अनेक ऐतिहासिक स्थलों पार सुरक्षा की कमी होती है। स्मारकों पर तोड़-फोड़, दीवारों पर लिखाई या चोरी जैसी घटनाएँ होती हैं। कई जगहों पर गाइड की कमी या अनुचित व्यवहार भी पर्यटकों के अनुभव को प्रभावति करता है।

7. **स्थानीय समुदाय की उपेक्षा-** कई बार पर्यटन योजनाएँ बनाते समय स्थानीय समुदाय को शामिल नहीं किया जाता। इससे लोगों में असंतोष फैलता है क्योंकि वे अपनी संस्कृति और परंपराओं को केवल प्रदर्शनी की

वस्तु मानने लगते हैं।

8. **पर्यावरणीय चुनौतियाँ–** सांस्कृतिक धरोहरों वाले स्थल प्राय: प्राकृतिक संसाधनों से जुड़े होते हैं। अत्यधिक पर्यटन से जल, वायु और ध्वनि प्रदूषण बढ़ता है। प्लास्टिक और कचरा भी स्मारकों की सुंदरता हो नष्ट करता है।

9. **वैश्वीकरण का प्रभाव–** वैश्वीकरण और आधुनिकता के दौर में युवा पीढ़ी पारंपरिक संस्कृति से दूर होती जा रही है। सांस्कृतिक पर्यटन यदि केवल विदेशी पर्यटकों पर केंद्रित हो जाए तो स्थानीय समाज अपनी ही संस्कृति से विमुख हो सकता है। इससे सांस्कृतिक विविधता और विशिष्टता खतरे में पड़ती है।

10. **नीतिगत और प्रशासनिक समस्याएँ–** सांस्कृतिक पर्यटन से जुड़ी योजनाएँ कागजों पर रह जाती हैं। कई बार केन्द्र और राज्य सरकारों के बीच समन्वय की कमी होती है। भ्रष्टाचार और लापरवाही भी संरक्षण कार्यों में बाधा डालते हैं।

सांस्कृतिक विरासत आधारित पर्यटन अपार संभावनाओं से भरा हुआ है, लेकिन इसके सामने अनेक चुनौतियाँ भी हैं। धरोहरों का संरक्षण, भीड़ प्रबंधन, स्थानीय समुदाय की भागीदारी, उचित वित्तीय निवेष और पर्यावरणीय संतुलन इसके सतत विकास के लिए आवश्यक है।

समाधान एवं सुझाव– सांस्कृतिक विरासत आधारित पर्यटन किसी भी देश की पहचान, अर्थव्यवस्था और सांस्कृतिक अस्मिता को मजबूत बनाने का साधन है। भारत जैसे देश में जहाँ विविधता और प्राचीनता से परिपूर्ण धरोहरें हैं। इनके समक्ष अनेक चुनौतियाँ भी हैं। इन चुनौतियों के कुछ समाधान और सुझाव निम्नानुसार हैं–

1. **संरक्षण और रख–रखाव को प्राथमिकता–** ऐतिहासिक स्मारकों और धरोहरों की नियमित देखभाल और संरक्षण कार्य योजनाबद्ध तरीके से किया जाये। स्थनीय प्रषासन, पुरातत्व विभाग और निजी संस्थानों के बीच सहयोग की व्यवस्था हो।

2. **भीड़ प्रबंधन और सतत् पर्यटन–** प्रसिद्ध स्थलों पर पर्यटकों की संख्या सीमित करने लिए ऑनलाईन बुकिंग सिस्टम, टाईम स्लॉट और गाइडेड टूर की व्यवस्था की जाये। सतत पर्यटन नीति के अंतर्गत पर्यावरण और संस्कृति दोनों का संतुलन बनाए रखा जाए।

3. **सांस्कृतिक मौलिकता का संरक्षण–** पारंपरिक कला, नृत्य, संगीत और त्योहारों को केवल प्रदर्षन की वस्तु न माना जाए। कलाकारों और शिल्पकारों को उचित पारिश्रमिक, प्रशिक्षण और मंच प्रदान किया जाए।

4. **बुनियादी ढ़ाँचे का विकास–** ग्रामीण और दूरस्थ सांस्कृतिक स्थलों तक पहुँचने के लिए सड़क, परिवहन और स्वास्थ्य सुविधाओं में सुधार किया जाए। साफ–सुथरे शौचालय, पेयजल, विश्राम गृह बनाये जायें। इंटरनेट और मोबाईल कनेक्टीविटी भी पर्यटन स्थलों पर उपलब्ध कराई जाए।

5. **वित्तीय संसाधनों की उपलब्धता–** पर्यटन से प्राप्त राशि को धरोहर संरक्षण में लगाया जाए। निजी क्षेत्र को कॉर्पोरेट सामाजिक उत्तरदायित्व के अंतर्गत धरोहर संरक्षण परियोजनाओं में भागीदारी के लिए प्रोत्साहित किया जाए।

6. **सुरक्षा और प्रबंधन सुधार–** ऐतिहासिक स्मारकों की सुरक्षा के लिए प्रशिक्षित गार्ड, सीसीटीवी और आधुनिक सुरक्षा उपकरण लगाए जाएँ। अनुशासन और स्वच्छता के कड़े नियम बनाए जाएँ और उनका पालन सुनिश्चित किया जाए।

7. **स्थानीय समुदाय की भागीदारी–** पर्यटन योजनाओं में स्थानीय गाँवों और कस्बों के युवाओं को गाइड, शिल्पकार, कलाकार या उद्यमी के रूप में अवसर दिए जाएँ। इससे वे आर्थिक लाभ के साथ अपनी संस्कृति को संर.क्षित करने के लिए अधिक उत्साहित रहेंगे।

8. **पर्यावरणीय संरक्षण–** पर्यटन स्थलों पर प्लास्टिक और प्रदूषण पर रोक लगाने के बड़े कदम उठाए जाएँ। इको टूरिज्म को बढ़ावा दिया जाये ताकि पर्यावरण और धरोहर दोनों सुरक्षित रहें। पर्यटकों को पर्यावरण संरक्षण की जानकारी दिया जाये।

9. **नीतिगत और प्रशासनिक सुधार–** केंद्र और राज्य सरकारों के बीच समन्वय स्थापित कर संयुक्त नीतियाँ बनाई जाए। निगरानी तंत्र मजबूत किया जाये। पर्यटन केंद्रों पर सूचना केंद्रों की स्थापना की जाए।

सांस्कृतिक विरासत आधारित पर्यटन में चुनौतियाँ गंभीर अवश्य हैं परंतु योजनाबद्ध संरक्षण, सतत प्रबंधन व आधुनिक तकनीक का उपयोग से इन्हें दूर किया जा सकता है।

निष्कर्ष– सांस्कृतिक विरासत आधारित पर्यटन आर्थिक लाभ के साधन के साथ वह सेतु है जो अतीत की गौरवशाली धरोहर को वर्तमान की अवश्यकताओं और भविष्य की संभावनाओं से जोड़ता है। यदि इसे योजनाबद्ध तरीके से विकसित किया जाए तो यह सांस्कृतिक अस्मिता को सुदृढ़ करेगा और आगे आने वाली पीढ़ियों के लिए प्रेरणा स्रोत भी बनेगा।

संदर्भ ग्रंथ सूची :–

1. राधेशरण (1987) भारत की सांस्कृतिक धरोहर, पुष्पराज प्रकाशन, इलाहाबाद (उ.प्र.)।
2. मौर्य, एस.डी. (2022) पर्यटन भूगोल, शारदा पुस्तक भवन प्रयागराज।
3. खत्री, हरीश कुमार (2020) पर्यटन भूगोल, कैलाश पुस्तक सदन भोपाल।
4. बंसल, सुरेश चंद्र (2019) पर्यटन भूगोल एवं यात्रा प्रबंधन।
5. https://www.mdpi.com/2071-1050/15/15/11986
6. https://cdn.visionias.in/value_added_material/9af28-weekly-focus-123_indias-cultural-heritage.pdf
7. https://en.wikipedia.org/wiki/Heritage_tourism
8. https://www.inspirajournals.com/uploads/Issues/1144197082.pdf

****